इसी काल में सौर ऊर्जा भी उपस्थित था किन्तु इसके विषय में ज्ञान नहीं होने के कारण तकनीक उसका हनन नहीं कर पाई। उसके पश्चात् जब खेती और पशु पालन की शुरुआत हुई तब मनुष्य ऊर्जा को हनन के लिए जानवरों का इस्तेमाल करने लगा जिस के कारण ट था संस्कृति और आर्थिक विकसित हुई जिसके कारण नगर राज्यों का निर्माण शुरु हुआ। इसके पश्चात् ऊर्जा हनन चरम सीमा पर आई जब ईंधन क्रांति हुई जिसके कारण औद्योगिक क्रांति सम्भव हो पाई। इस काल में कोयला सबसे महत्वपूर्ण ऊर्जा स्रोत था। और अन्ततः आज हम परमाणु ऊर्जा की बात करते हैं।

White अपने सिद्धांत में उद्विकास को बिल्कुल एक शास्त्रीय उद्विकासवादियों के जैसे ही समझते हैं। यहाँ भी अपने सिद्धांत में उन्होंने मानव

समाज और संस्कृति को आध्यात्मिकता,
उसके बाद अर्थव्यवस्था और अन्ततः
प्रौद्योगिकी के रूप में दर्शाया
है। इस प्रकार White ने
तत्वों के आधार पर उद्विकासवादी
को एक नए दृष्टिकोण के साथ
प्रस्तुत किया और इस लिए
हम उन्हें नव उद्विकासवादी सम्प्रदाय
के अन्तर्गत रखते है और
White ने ही अमेरिका में नव उद्विकासवादी
सम्प्रदाय की नींव रखी थी।

Abhay Sir

(2)

Date-2/12/15

Leslie. A. White

नवउद्विकासवाद सम्प्रदाय के एक महत्वपूर्ण विद्वान जिन्हे हम Leslie. A white के नाम से जानते है का जन्म 1900 ई. में हुआ और देहांत 1975 ई. में हुआ। इनके गुरु जी Franz Boas थे जिन्होंने अमेरिकी प्रसारवाद सिद्ध सम्प्रदाय की अगुवाई की थी। White का कहना था कि वे F. Boas उद्विकासवाद के विरोध में नहीं थे और उन्होंने साथ ही प्रसारवाद का भी विरोध नहीं किया किन्तु एक शर्त रखी। उनका मानना था कि उद्विकासवाद हो या प्रसार वाद हो हम उन्हे तभी समर्थन देंगें जब हमारे पास ठोस ऐतिहासिक साक्ष्य उपलब्ध हो। Boas मानते है कि हम इतिहास विरोधी नहीं है किन्तु मानवशास्त्र में हमारे पास प्राचीन मनुष्य का लिखित इतिहास नहीं होने के कारण हमारे पास ठोस साक्ष्य

नहीं है। Boas के इस विचारधारा का Leslie. A. White पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा जब 1927 के आस-पास वे शिकागो विश्व विद्यालय से P.hd कर रहे थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि White के शुरुवाती शैक्षणिक जीवन में प्रसारवाद का अधिक प्रभाव रहा क्योंकि उनके छात्र Franz Boas प्रसारवाद का समर्थन करते थे। जब उनके पास ऐतिहासिक साक्ष्य उपलब्ध हो गए।

— Leslie A White ने कुछ समय पश्चात University of Buffalo में शिक्षण कार्य शुरू किया। यह विश्व विद्यालय Iroquois भारतीय (अमेरिका) के निवास स्थान के निकट था। White इस कारण इन समुदायों से प्रभावित होते हैं और शिक्षण के दौरान ही उन्होंने L.H. Morgan की पुस्तक का अध्ययन किया। Morgan की पुस्तक में उनका झुकाव उद्विकासवाद की ओर कर दिया और उसके

प्रशात के घोर समर्थक थे और साथ ही साथ Boas के सिद्धांतो या प्रभाववाद सम्प्रदाय के विरोध थे गए। Morgan की कला कृति के अध्ययन से जिसमें Karl Marx तथा Friedrich Engels के सिद्धांतो का जिक्र तथा उससे भी वो बहुत प्रभावित हुए।

~ Marx से वे इतने प्रभावित हुए कि सन् 1929 में वे सोवियत संघ (रूस) भी अध्ययन के लिए गए। वहाँ से लौटने के बाद उन्होंने मिशीगन विश्वविद्यालय में शिक्षण कार्य शुरु किया। White के द्वारा ही मिशीगन विश्वविद्यालय में मानवशास्त्र विषय का एक अलग विभाग शुरु हुआ।

~ White ने अपने पूर्व के विद्वानों और समकालीन विद्वानों के सिद्धांतो का अध्ययन किया। जिसमे प्रमुख रूप से L.H. Morgan, Tylor, Herbert Spencer, Durkheim

इत्यादि शामिल थे। इन सभी के योग को इन्होंने एक साथ सामान्य रूप से उद्विकासवाद को एक नए दृष्टिकोण से नवउद्विकासवाद के रूप में प्रस्तुत किया।

Date – 4/12/15 Abhay

~ White का नवउद्विकासवाद का सिद्धांत =>

उद्विकासवाद से प्रभावित होने के बाद White ने 1925 से 1966 तक अनेक रचनाएँ लिखि। इन पुस्तकों एवं रचनाओं में इन्होंने नवउद्विकासवाद को अपने दृष्टिकोण से मानवशास्त्र में समझाने का प्रयास किया। उनकी दो प्रमुख रचनाएँ है –> ① The science of culture (1949)

② The Evolution of culture (1959)

– इन दोनों पुस्तकों में उन्होंने नवउद्विकासवाद को वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा समझाने का प्रयास किया।

③

White कहते है कि सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था तीन तथ्यो पर निर्भर है। ① तकनीकी तथा अर्थ व्यवस्था आर्थिकी।
② सामाजिक ③ सैद्धांतिक या वैचारिक।

White कहते है कि संस्कृति एक माध्यम है जिसके द्वारा हम पर्यावरण या वातावरण में उपस्थित ऊर्जा का हनन कर सकते है। संस्कृति मनुष्य द्वारा सीखी जाती है और यह हमेशा मनुष्य में निरन्तरता में बनी रहती है। मनुष्य के द्वारा बनाए गए भौतिक संस्कृति को हम व अपने आस - पास सांकेतिक रूप से देखते है और इसी संस्कृति अपनी सांकेतकवाद के द्वारा निरन्तरता बनाई रखती है।

संस्कृति मानव जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि संस्कृति नही होती तो मनुष्य नही होगा और ठीक उसी प्रकार यदि मनुष्य नही होगा तो

(7)

करने का ज्ञान निहित होता है।
इसी ज्ञान के द्वारा ऊर्जा का
उत्पादन सम्भव हो पाता है। इसी
ऊर्जा के आधार पर एक समाज
या संस्कृति विकसित होती है।
दूसरी व्यवस्था सामाजिक संरचना
है जिसके द्वारा हम किसी समाज
में उपस्थित अनेक इकाईयो के
अर्थपूर्ण सम संबंधो का सम्पूर्ण
अध्ययन करते है। और तीसरी
महत्वपूर्ण व्यवस्था है वैचारिक
ज्ञान जिसके द्वारा मनुष्य इन
सभी व्यवस्थाओ को सही तरीके
से इस्तेमाल कर के सामाजिक
व्यवस्था को बनाए रखता है।

5/12/15

White के अनुसार जिन 3 व्यवस्था
का उन्होने जिक्र किया है वे
एक दूसरे के साथ आपस आपसी
संबंध अर्थपूर्ण ढंग से बनाए
रखते है। इन तीनो में से तकनीक
सबसे अधिक प्रभावशाली होती है
तथा वह सामाजिक व्यवस्था तथा
वैचारिक सिद्धांत के द्वारा कार्य

Page No.: 9 Date: / /

(6)

संस्कृति नहीं होती। इस तथ्य के यह आवश्यक है कि हम एक सार्वभौमिक संस्कृति की बात करें न कि स्थानीय संस्कृति की। जैसा कि हमने अपनी चर्चा में पहले ही कहा था कि संस्कृति एक माध्यम है जिसके द्वारा पर्यावरण से ऊर्जा का हनन होता है तथा इसी संस्कृति के द्वारा इस ऊर्जा का इस्तेमाल भी होता है। संस्कृति का यह पक्ष महत्वपूर्ण प्रकार्य है। जैसे-जैसे संस्कृति के द्वारा हनन होने वाली पर्यावरण तथा उससे अर्जित होने वाली ऊर्जा बढ़ती चली जाएगी, एक संस्कृति उतनी ही अधिक जटिल होती जाएगी। इस जटिलता के साथ वह संस्कृति समाज को और भी विकसित करती जाएगी।

संस्कृति व्यवस्था में पुन: उपव्यवस्था की चर्चा White करते हैं। सबसे पहले तकनीक आता है जिसके अन्तर्गत औजार तथा हथियार और उसे इस्तेमाल

(8)

करती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि तकनीक सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक सिद्धांत इन दोनों के ऊपर होती है। यही तकनीक इस बात का नियंत्रण करती है कि वातावरण से कितना ऊर्जा समाज को ग्रहण करना चाहिए और "यह बात किसी भी समाज के सांस्कृतिक में निहित है।"

संस्कृति और ऊर्जा को और साथ में तकनीक के आधार पर White ने अपना सिद्धांत दिया। वे कहते - संस्कृति विकसित होगी जब ऊर्जा की मात्रा को हनन हर प्रति व्यक्ति, प्रति वर्ष बढ़ती चली जाएगी।

$$E \times T = C$$

$E \times T = C$
$1 \times 1 = 1$
$1 \times 5 = 5$
$5 \times 1 = 5$
$5 \times 5 = 25$

E = Energy
T = Technology
C = Culture

White ने अपने सिद्धांत में एक समीकरण के द्वारा नव उद्विकासवाद

(9)

के अपने सिद्धांत को समझाने का प्रयास किया जिसमें E = ऊर्जा, T = तकनीक तथा C = संस्कृति। White के कहते है यदि T उन्नत कोटि की होगी और ऊर्जा भी अधिक हनन होगा तब तब C भी अधिक उन्नत होगी। स. यहाँ White और एक बात स्पष्ट करते है कि जब भी E का हनन होगा, उसके पश्चात उस समाज के संस्कृति में उस ऊर्जा को उपयोग में लाने की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए अन्यथा इसका कोई लाभ नहीं होगा। इसी लिए उन्होंने कहा है कि "तकनीक और सामाजिक व्यवस्था का कंकाल है तथा ऊर्जा उस कंकाल में प्राण है।" उदाहरण लेते हुए वे कहते है जब मानव का जीवन आखेट एवम् खाद्य संकलन का था उस समय तकनीक कमजोर थी जिसके कारण संस्कृति भी बहुत अधिक विकसित नहीं हो पाई।